IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कथक नृत्य की ऑनलाईन शिक्षा – समस्या या समाधान

मालविका पण्डित
शोधार्थी – संगीत विभाग, बनस्थली विद्यापीठ, बनस्थली (राज.)

प्रो. किंशुक श्रीवास्तव
शोध–निर्देशक, संगीत विभाग, बनस्थली विद्यापीठ, बनस्थली (राज.)

सारांश – कोरोना काल में कथक नृत्य की परम्परागत शिक्षा प्रणाली और संस्थागत शिक्षा के समानान्तर 'ऑनलाईन शिक्षा प्रणाली' या 'डिज़िटल शिक्षा प्रणाली' नामक एक नई और अत्याधुनिक शिक्षा व्यवस्था की स्थापना हुई। यह शिक्षा प्रणाली कथक नृत्य की शिक्षा की दृष्टि से कितनी लाभदायक सिद्ध होगी और यह अत्याधुनिक शिक्षा प्रणाली कथक शिक्षा के लिए समाधान है या फिर समस्या, यह इस शोध–लेख का मूल प्रतिपाद्य विषय है।

मुख्य शब्द – कथक नृत्य, परम्परागत शिक्षा, कोरोना, संस्थागत शिक्षा, आधुनिक शिक्षा, ऑनलाईन शिक्षा।

वर्ष 2020 2021 भारत सहित सम्पूर्ण विश्व के लिए भयावह त्रासदीपूर्ण समय सिद्ध हुआ। इन दो वर्षों में प्रायः विश्व के प्रत्येक देश कोरोना जैसी महामारी के चपेट में आ गए और जीवन थम–सा गया। सभी प्रकार के कार्य रूक गये, धन–जन की अत्यधित हानि हुई। इन सभी के साथ–साथ कोरोना का गंभीर प्रभाव शिक्षा पर भी पड़ा। विश्वविद्यालय, महाविद्यालय, स्कूल और सभी शैक्षणिक संस्थायें बंद हो गई, जिसका सीधा प्रभाव विद्यार्थियों के जीवन और उनके भविष्य पर पड़ने लगा। इस परिस्थितियों में शिक्षकों, शिक्षण संस्थाओं तथा विद्यार्थियों के समक्ष ऑनलाईन शिक्षा एक महत्त्वपूर्ण माध्यम के रूप में उभरकर सामने आया। डूबते को तिनके का सहारा, इस कहावत को चरितार्थ करती ऑनलाईन माध्यम से शिक्षा जगत में एक नई पहल अथवा एक नई क्रांति का सूत्रपात हुआ। संगीत और नृत्य शिक्षा भी कोरोना महामारी के दौरान इस क्रांतिकारी शिक्षण पद्धति से लाभान्वित हुई। जिस प्रकार प्राचीन समय से अब तक संगीत और नृत्य की शिक्षा प्रदान करने हेतु भिन्न–भिन्न माध्यम अपनाए गए हैं तथा संगीत शिक्षा की व्यवस्था को उपयोगी व जन–जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से नई–नई शिक्षण पद्धतियाँ अपनाई गई हैं, उसी श्रृंखला में 'ऑनलाईन' शिक्षा को 21वीं सदी की देन माना जाना चाहिए। भारत में संगीत और नृत्य शिक्षण की प्राचीन पद्धतियों पर दृष्टिपात करते हुए 'ऑनलाईन शिक्षा' से विद्यार्थियों को होने वाले लाभ और इससे उत्पन्न समस्याओं की समीक्षा आगे की जा रही है, इससे पूर्व संगीत शिक्षा की महत्त्वपूर्ण पद्धतियों पर चर्चा आवश्यक प्रतीत होती है।

भारत में संगीत शिक्षा की प्रमुख रूप से तीन पद्धतियाँ अपने–अपने समय में प्रचलित रही हैं– आश्रम या गुरुकुल पद्धति, गुरु–शिष्य परम्परा और संस्थागत शिक्षण पद्धति या आधुनिक शिक्षण पद्धति। आश्रम या गुरुकुल शिक्षण पद्धति का प्रचलन प्राचीन भारत में था, जिसका प्रमाण रामायण, महाभारत आदि प्राचीन महाकाव्यों में उल्लिखित प्राप्त होता है। 'पुराणकालीन एवं इतिहासकालीन विषयों के उल्लेख हमें

स्थान–स्थान पर मिलते हैं। संगीत शिक्षा के संदर्भ में यही पद्धति 'गुरु–शिष्य–प्रणाली' या 'परम्परा' के नाम से पहचानी जाती है, जिसके अंतर्गत गुरु का शिष्य को विद्यादान देना और शिष्य द्वारा उसमें पारंगतता प्राप्त करना ही शिक्षा का मुख्य उद्देश्य था।'[1] गुरु–शिष्य परम्परा का विकास मध्यकाल की देन माना जा सकता है। यह पद्धति विशिष्ट रूप से कब प्रारंभ हुई, यह तो निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता अपितु इतना अवश्य है कि प्राचीन गुरुकुल पद्धति ही 'गुरु–शिष्य परम्परा' या घरानेदार शिक्षण पद्धति का आधार है। 'घरानेदार संगीत का उद्गम स्थान है संगीतकार, कलाकार या अधिक गहराई में जाकर कहें तो संगीतज्ञ जो शतकों तक अपने चुनिन्दा शिष्यों को सिखाते आये हैं। यह प्रणाली परम्परागत् गुरु–शिष्य प्रणाली ही कही गई है। इस प्रणाली में शिष्य बचपन से ही गुरु के घर जाकर रहते थे व संगीत की शिक्षा लेते थे।'[2]

संगीत शिक्षा की आधुनिक पद्धति का प्रारंभ लगभग 19वीं शताब्दी के अंतिम दशकों और 20वीं शताब्दी के प्रारंभिक दशक में हुआ। चूँकि कला और साहित्य की दृष्टि से यह समय 'आधुनिक' कहलाया, संभवतः इसी कारणवश संगीत शिक्षण की इस नवीन पद्धति को आधुनिक शिक्षण पद्धति कहा गया। इस पद्धति को संस्थागत शिक्षण पद्धति भी कहा जाता है। इसका सीधे तौर पर कारण यह है, कि जिस प्रकार गुरु–शिष्य परम्परा में गुरु के घर पर रहकर संगीत की शिक्षा ग्रहण की जाती है, उसी प्रकार आधुनिक संगीत शिक्षा हेतु पृथक् रूप से संस्थाएँ स्थापित की गईं, जहाँ संगीत अर्थात् गायन, वादन और नृत्यादि कलाओं को सीखने की इच्छा रखने वाला व्यक्ति शिक्षा प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार संस्थाओं के माध्यम से शिक्षा प्रदान किए जाने के कारण इस आधुनिक पद्धति को 'संस्थागत शिक्षण पद्धति' भी कहा जाता है। ये दोनों ही नाम समान रूप से प्रचलित हैं।

विशेष रूप से कथक नृत्य की बात करें, तो संगीत शिक्षा की प्राचीन आश्रम पद्धति में नृत्य शिक्षा का उल्लेख कम ही प्राप्त होता है, किन्तु इतना अवश्य है कि प्राचीन साहित्य में सामाजिक रूप से नृत्य के प्रचलन के संबंध में पर्याप्त प्रमाण प्राप्त होते हैं। देवताओं, अप्सराओं, असुरों और किन्नरों में नृत्य प्रचलित होने के साथ–साथ सामाजिकों द्वारा विशेष अवसरों पर नृत्य किया जाता था। प्राचीन एवं मध्य काल में प्रचलित नृत्य का कोई विशेष नाम प्राप्त नहीं होता। 'भारतीय संगीत–शिक्षा–प्रणाली मूलतः गुरुकुल–पद्धति पर ही आधारित रही है। गुरुकुल का अर्थ है– गुरु के गृह या आश्रम में रहकर विद्योपार्जन करना। जिन विद्यार्थियों को संगीत शिक्षा ग्रहण करने की प्रबल इच्छा होती थी, वे गुरु के आश्रम या घर में उनके साथ रहकर कई वर्षों तक लगातार संगीत की शिक्षा लेते थे।'[3]

कथक नृत्य की शिक्षा का जहाँ तक प्रश्न है, तो इस विषय में विशेष रूप से कोई लिखित प्रमाण प्राप्त तो नहीं होता तथापि नाट्यशास्त्र आदि ग्रंथों में नृत्य संबंधी निर्देश तथा मंदिरों में नृत्य की तत्कालीन परम्परा के आधार पर अनुमान है कि उस दौर में नृत्य–शिक्षा गुरुओं के माध्यम से प्रदान की जाती थी। कथक नृत्य का संबंध कथावाचन और मंदिर परम्परा से जोड़कर देखा जाता है। अतः संभव है कि उत्तर भारत के मंदिरों में इस नृत्य की शिक्षा परम्परागत रूप से दिये जाने की व्यवस्था रही होगी।

कथक नृत्य के वर्तमान स्वरूप का विकास वास्तव में मुगल काल में हुआ। नर्तक और नर्तकियों को हिन्दू और मुस्लिम दरबारों में स्थान मिला, जहाँ वे कथक नृत्य की साधना और प्रस्तुति किया करते थे। इस काल में कथक नृत्य में तरह–तरह के प्रयोग भी हुए तथा यह नृत्य का 'शुद्ध नृत्य' पक्ष और 'भाव पक्ष' अधिक सूक्ष्मता और प्रयोगात्मक रूप में विकसित हुआ। दरबारों के बाद घरानों में कथक नृत्य को शास्त्रीय आधार प्राप्त होने के साथ–साथ उसकी शैलिगत विशेषताओं पर अत्यधिक कार्य हुए। साथ ही घरानों के माध्यम से ही कथक नृत्य की सुव्यवस्थित परम्परा स्थापित हो सकी।

आधुनिक काल में भी कथक नृत्य के घराने यद्यपि अपनी शैलिगत विशेषताओं के कारण प्रसिद्ध हैं तथापि संस्थागत शिक्षा के माध्यम से कथक नृत्य की शिक्षा और इसका प्रचार द्रुत गति से हुआ। चूँकि संस्थागत शिक्षण पद्धति में कोई भी व्यक्ति, जो कथक नृत्य से सीखने की इच्छा रखता है, वह आसानी से किसी संस्था के माध्यम से इस नृत्य की शिक्षा प्राप्त कर सकता है, यह सुविधा घरानों में नहीं

थी। इसका परिणाम यह हुआ कि एक ओर तो कथक नृत्य शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को संख्या में अत्यधिक वृद्धि हुई और दूसरी ओर उत्तर भारत के छोटे–बडे शहरों में संस्थागत शिक्षा प्रदान करने हेतु संस्थाओं का प्रारंभ की गई।

भारत में संस्थागत शिक्षा पद्धति का प्रभाव स्वतंत्रता के बाद बढ़ता गया। देश में अनेक महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों की स्थापना की गई, जहाँ कथक नृत्य को एक विषय के रूप में स्थान दिया गया। अन्य विषयों की ही भाँति कथक नृत्य की शिक्षा हेतु व्यवस्थित पाठ्यक्रम भी बनाया गया है तथा डिप्लोमा, स्नातक, स्नात्कोत्तर स्तर पर शिक्षा प्रदान की जा रही है। इसके अतिरिक्त जो विद्यार्थी कथक नृत्य विषय पर शोध करना चाहते हैं, उनके लिए एम.फिल., पी–एच.डी. के साथ–साथ डी.लिट्. की व्यवस्था भी विश्वविद्यालयों में शोधार्थी के लिए की गई है।

जैसा कि ज्ञात है, कि कथक नृत्य एक प्रायोगिक कला है। यह नृत्य को शास्त्रों पर आधारित माना गया है इसके साथ–साथ इसका प्रायोगिक पक्ष अपेक्षाकृत अधिक महत्त्वपूर्ण माना जाता है। घरानों में अथवा गुरु–शिष्य परम्परा में सीखने वाले विद्यार्थियों के प्रयोगिक पक्ष पर विशेष ध्यान दिया जाता था, जबकि संस्थाओं में सीखने वाले विद्यार्थियों को शास्त्र और प्रयोग दोनों ही पक्षों का समान रूप से अध्ययन करवाया जाता है।

वर्ष 2020 और 2021 में जब सम्पूर्ण देश कोरोना जैसी महामारी से पीड़ित था और कथक नृत्यादि कलाओं व विषयों की शिक्षा पूर्णतः बाधित हो गई, ऐसी विकट परिस्थिति में शिक्षाविदों ने विद्यार्थियों को ऑनलाईन शिक्षा प्रदान करने का निर्णय लिया। शिक्षा प्रदान करने के इस अत्याधुनिक और वैकल्पिक उपाय से कथक नृत्य की शिक्षा में एक नया अध्याय जुड़ गया। शिक्षण की ऑनलाईन पद्धति आधुनिक वैज्ञानिक और संचार तकनीक से परिपूर्ण है जिसमें इन्टरनेट के साथ–साथ एक उपकरण, जैसे– मोबाईल, कम्प्यूटर या लैपटॉप, नोटपैड की अनिवार्यता होती है। इन उपकरणों में एक विशेष एप्लीकेशन के माध्यम से शिक्षक घर से ही अपने सभी विद्यार्थियों से ऑनलाईन माध्यम से जुड़ जाता है और उन्हें उनकी कक्षा के अनुरूप निर्धारित पाठ्यक्रम के अंतर्गत मौखिक रूप से शिक्षा प्रदान करता है। साथ ही, प्रयोग भी करके दिखा सकता है, जिसे सभी विद्यार्थी अपनी–अपनी स्क्रीन पर देखकर सीख सकते हैं तथा प्रयोग से संबंधित पक्षों को समझ लेते हैं। इन दो वर्षों में विद्यार्थियों की परीक्षा भी ऑनलाईन माध्यम से सम्पन्न हुई। इसके अंतर्गत विद्यार्थियों को प्रश्न–पत्र ऑनलाईन माध्यम, जैसे– ईमेल, वाट्सअप, टेलीग्राम आदि एप्लीकेशन्स की सहायता से भेज दिए गए और विद्यार्थियों द्वारा अपने उत्तर लिखकर इन्हीं माध्यमों से अपने शिक्षक अथवा संस्था को प्रेषित कर दिया गया। इसी प्रकार प्रायोगिक पक्ष की परीक्षा के दौरान विद्यार्थियों ने कथक नृत्य की रचनाओं, बंदिशों पर घर पर प्रयोग कर उसकी रिकार्डिंग्स तैयार कर ईमेल, वाट्सअप, टेलीग्राम आदि एप्लीकेशन्स की सहायता से भेज दिए गए। संस्था द्वारा इसी आधार पर उनका मूल्यांकन कर उन्हें उत्तीर्ण कर दिया गया। इस सम्पूर्ण ऑनलाईन व्यवस्था से कथक नृत्य के विद्यार्थियों को कोरोना काल में भी घर बैठे–बैठे शिक्षा चलती रही, जिससे उनकी शिक्षा भी गतिशील बनी रही और उनका भविष्य भी बाधित होने से बच गया। देश–दुनिया की कोरोना काल में जैसी दुःखद परिस्थिति थी, उन परिस्थितियों में ऑनलाईन शिक्षा उम्मीद की एक किरण की भाँति प्रचलित हो गई।

कथक नृत्य की स्नातक, स्नातकोत्तर और डिप्लोमा की कक्षाओं के साथ–साथ पी–एच.डी. कर शोधार्थियों के लिए भी ऑनलाईन माध्यम प्रायः सफल सिद्ध हुआ। इसके माध्यम कथक नृत्य में शोध कर रहे विद्यार्थी अपने निर्देशक के सम्पर्क में रहते हुए अपना कार्य कर रहे थे, इसके अतिरिक्त शोधार्थियों ने ऑनलाईन पद्धति से ही शिक्षाविदों, नृत्याचार्यों और विद्वानों से घर बैठे–बैठे ही साक्षात्कार लेने लगे। इससे उनका शोध–कार्य बाधित न हो सका। इस दौरान अनेक शोधार्थियों ने अपना शोध–कार्य पूर्ण भी किया। संस्था द्वारा शोध–कार्य की मौखिक परीक्षा भी ऑनलाईन माध्यम से ही ली गई, जिससे शोधार्थियों के जीवन का एक महत्त्वपूर्ण समय नष्ट होने से बच गया, साथ–ही उन्हें पी–एच.डी. की डिग्री भी प्राप्त हो गई। एक गैर शासकीय संस्था द्वारा किए सर्वेक्षण के अनुसार केवल 43% विद्यार्थियों के पास ही ऑनलाईन शिक्षा प्राप्त करने हेतु आवश्यक उपकरण उपलब्ध हैं– 'लोकल सर्कल नाम की एक गैर सरकारी संस्था ने एक सर्वे किया है जिसमें 203 ज़िलों के 23 हज़ार लोगों ने हिस्सा लिया। जिनमें से 43% लोगों ने कहा कि बच्चों की ऑनलाइन क्लासेस के लिए उनके

पास कम्प्यूटर, टेबलेट, प्रिंटर, राउटर जैसी चीज़ें नहीं है। ग्लोबल अध्ययन से पता चलता है कि केवल 24% भारतीयों के पास स्मार्टफोन है। राष्ट्रीय सैंपल सर्वेक्षण रिपोर्ट 17-18 के अनुसार 11% परिवारों के पास डेस्कटॉप कंप्यूटर/लैपटॉप/नोटबुक/नेटबुक/पामटॉप्स या टैबलेट हैं। इस सर्वे के अनुसार केवल 24% भारतीय घरों में इंटरनेट की सुविधा है, जिसमें शहरी घरों में इसका प्रतिशत 42% और ग्रामीण घरों में केवल 15% ही इंटरनेट सेवाओं की पहुँच है।'[4]

कथक नृत्य में आधुनिक या संस्थागत शिक्षा प्रणाली का प्रारंभ 20वीं शताब्दी में हुआ तथा इस आधुनिक पद्धति के अंतर्गत एक शाखा के रूप में ऑनलाईन शिक्षा पद्धति का समावेश 21वीं शताब्दी की देन है। समय के साथ कथक नृत्य की शिक्षण पद्धति को इससे सम्बद्ध सभी वर्ग के लोगों ने स्वीकार किया। कथक नृत्य जैसी प्रयोग प्रधान कला की दृष्टि से देखें, तो इस पद्धति में कुछ दोष भी दिखाई देते हैं, जिन्हें रेखांकित करना आवश्यक है।

कथक नृत्य मूलतः भाव प्रधान नृत्य है, जिसमें अंग–भंगिमा, नृत्य के दौरान शरीर की स्थिति, अंगों का रखाव, हस्त मुद्रायें, पाद–विन्यास आदि तत्वों का शास्त्रोक्त प्रयोग अनिवार्य है। कक्षा में भौतिक रूप से शिक्षा प्रदान करने के दौरान शिक्षक प्रत्येक विद्यार्थी की अंग–भंगिमाओं व अंगों के रखाव आदि तत्वों को सूक्ष्मता से समझा पाता है, जो कि ऑनलाईन शिक्षा में संभव नहीं है।

कथक नृत्य के भाव पक्ष से संबंधित शिक्षा के समय शिक्षक अपने विद्यार्थियों के समक्ष हाव, भाव आदि के साथ–साथ उपांगों का समुचित प्रयोग, शारीरिक चेष्टायें आदि क्रियाओं को भौतिक रूप से समझाता है, जिसे विद्यार्थी आसानी से समझ पाते हैं और कोई त्रुटि हो, तो शिक्षक उसी समय उसमें सुधार कर देता है। ऑनलाईन शिक्षा में इसकी संभावना बहुत कम हो जाती है।

कक्षा में नृत्य शिक्षा के दौरान विद्यार्थियों में प्रतियोगिता की भावना होती है, जिसका ऑनलाईन शिक्षा में अभाव दिखाई देता है।

कक्षा में शिक्षा के दौरान विद्यार्थी को किसी भी प्रकार के वैज्ञानिक उपकरणों की आवश्यकता नहीं होती, जबकि ऑनलाईन शिक्षा में वैज्ञानिक उपकरणों की आवश्यकता होती है। आर्थिक रूप से सम्पन्न विद्यार्थियों के लिए मोबाईल, कम्प्यूटर आदि उपकरण सहज हैं, परन्तु जिन विद्यार्थियों को आर्थिक समस्या है, वे ऑनलाईन माध्यम में शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते।

संस्थाओं में कथक नृत्य की कक्षाओं में होने वाले सैद्धान्तिक प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थी अपने अध्ययन के आधार पर देते हैं, जिससे उनकी नृत्य शिक्षा की वास्तविक स्थिति का सही–सही मूल्यांकन लगाया जा सकता है। ऑनलाईन माध्यम में विद्यार्थी घर बैठे प्रश्न पत्रों के उत्तर लिखते हैं। इस दौरान चूँकि उन पर किसी प्रकार की निगरानी या किसी प्रकार का दबाव नहीं होता, जिसके कारण वे उन प्रश्नों का भी उत्तर किताब या अपने नोट्स को देखकर लिख देते हैं, जिसमें उनकी तैयारी नहीं है। इस स्थिति में, विद्यार्थियों का वास्तविक मूल्यांकन कठिन हो जाता है। इन परिस्थियों में मेधावी, मध्यम और कमजोर वर्ग के छात्रों में कोई अन्तर ही नहीं रह जाता।

भारत जैसे विकासशील देश में इन्टरनेट सुविधा एक जैसी नहीं हैं, जिसके कारण साधन सम्पन्न विद्यार्थियों की शिक्षा बाधित नहीं होती अपितु जो विद्यार्थी ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं, उन्हें इन्टरनेट के साथ–साथ बिजली और बुनियादी ज़रूरतों का अभाव अपेक्षाकृत अधिक होता है, जिसका सीधा प्रभाव उनकी शिक्षा में पड़ता है।

कथक नृत्य से संबंधित संगोष्ठियों में अवश्य ही ऑनलाईन माध्यम से सकारात्मक पक्ष उभरकर आये हैं। कथक नृत्य का जो विद्यार्थी सेमीनार में किसी कारणवश जा नहीं पाता, वह ऑनलाईन माध्यम से सम्मिलित हो जाता है।

ऑनलाईन कथक नृत्य शिक्षा का सबसे बड़ा नुकसान यह है कि इसमें पारंपरिक कक्षा के जैसा माहौल नहीं बन पाता हैं। कक्षा में विद्यार्थी नृत्य की सैद्धान्तिक व प्रायोगिक शिक्षा प्राप्त करते हैं, जिसके फायदे बहुत ज्यादा हैं। शिक्षक के समक्ष विद्यार्थी भी पूर्णतः सजग और तैयार रहता है। इन स्थितियों में कक्षा में सामंजस्य व ऊर्जा का माहौल बना रहता हैं। शिक्षक किसी भी विद्यार्थी से नृत्य विषयक कोई प्रश्न पूछ लेता है अथवा किसी विशिष्ट मुद्रा या भंगिमा अथवा किसी रचना पर प्रयोग करने के लिए कह सकता है। इससे विद्यार्थियों

में प्रतियोगिता का भावना बढ़ती है। विशेष बात यह है, कि नृत्य की कक्षा में विद्यार्थी शिक्षक के समक्ष हर दृष्टि से अनुशासित होता है, जबकि ऑनलाईन शिक्षा में इस बात की संभावना थोड़ी कम ही दिखाई देती है। कुछ विद्यार्थी, जिनके पास ऑनलाईन शिक्षा के साधन तो हैं, किन्तु घर में कक्षा जैसा अनुशासन और नियमबद्धता न होने के कारण या तो समय पर ऑनलाईन आते नहीं, देर से ऑनलाईन होने पर इन्टरनेट कनेक्शन खराब होने या बंद होने जैसे अनेक बहाने तैयार रहते हैं, जिस पर शिक्षक को विश्वास करना ही होता है। इस दृष्टि से देखें, तो ऑनलाइन पढाई पर छात्र प्रतिक्रिया सीमित है तथा यह सामाजिक अलगाव का कारण बनता है। दूसरा प्रमुख तथ्य यह है कि नृत्य शिक्षा में समय–प्रबंधन कौशल में बाधक होती है तथा संचार संबंधी तकनीक विकास का अभाव है। इस परिणाम यह होता है, कि लगभग 60 से 70 प्रतिशत विद्यार्थी ही शिक्षा प्राप्त कर पाते हैं। ऑनलाइन नृत्य शिक्षा में रियाज़ का अभाव है, जिससे नृत्य शिक्षा गुणवत्ता में कमी आने की पूरी संभावना होती है।

वस्तुतः कोरोना काल जैसी जटिल परिस्थियों में ऑनलाईन या डिज़िटल शिक्षा प्रणाली को कथक नृत्य की शिक्षा हेतु वैकल्पिक उपाय अवश्य माना जा सकता है। इसके माध्यम से कोरोना काल में इस नृत्य की शिक्षा पूर्णतः बाधित नहीं हो सकी तथापि इसे पूर्ण रूप से लागू नहीं किया जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में यह शिक्षा प्रणाली वैकल्पिक समाधान के रूप में स्वीकार की जा सकती है। अतः सम्पूर्ण अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है, कि कथक जैसे भाव प्रधान, प्रयोग व रचनात्मकता प्रधान नृत्य हेतु परम्परागत या संस्थागत शिक्षा प्रणाली ही अधिक उपयुक्त है।

संदर्भ सूची–

1 शर्मा, डॉ. राधिका (2006), भारतीय संगीत को संस्थानों और मीडिया का योगदान, संजय प्रकाशन नई दिल्ली, 11-12

2 महाजन, डॉ. श्रीमती संध्या (2000), शास्त्रीय संगीत शिक्षा : समस्यायें एवं समाधान (घरानेदार संगीत शिक्षा : एक समीक्षात्मक दृष्टिकोण), आदित्य पब्लिशर्स बीना, 28

3 शर्मा, डॉ. राधिका (2006), भारतीय संगीत को संस्थानों और मीडिया का योगदान, संजय प्रकाशन नई दिल्ली, 11

4 Careerindia Hindi Desk (Thursday, June 17, 2021) ऑनलाइन पढ़ाई के नुकसान, जानिए ऑनलाइन पढ़ाई से बच्चे क्यों हो रहे परेशान, https://hindi.careerindia.com/tips/online-learning-disadvantages-003728.html